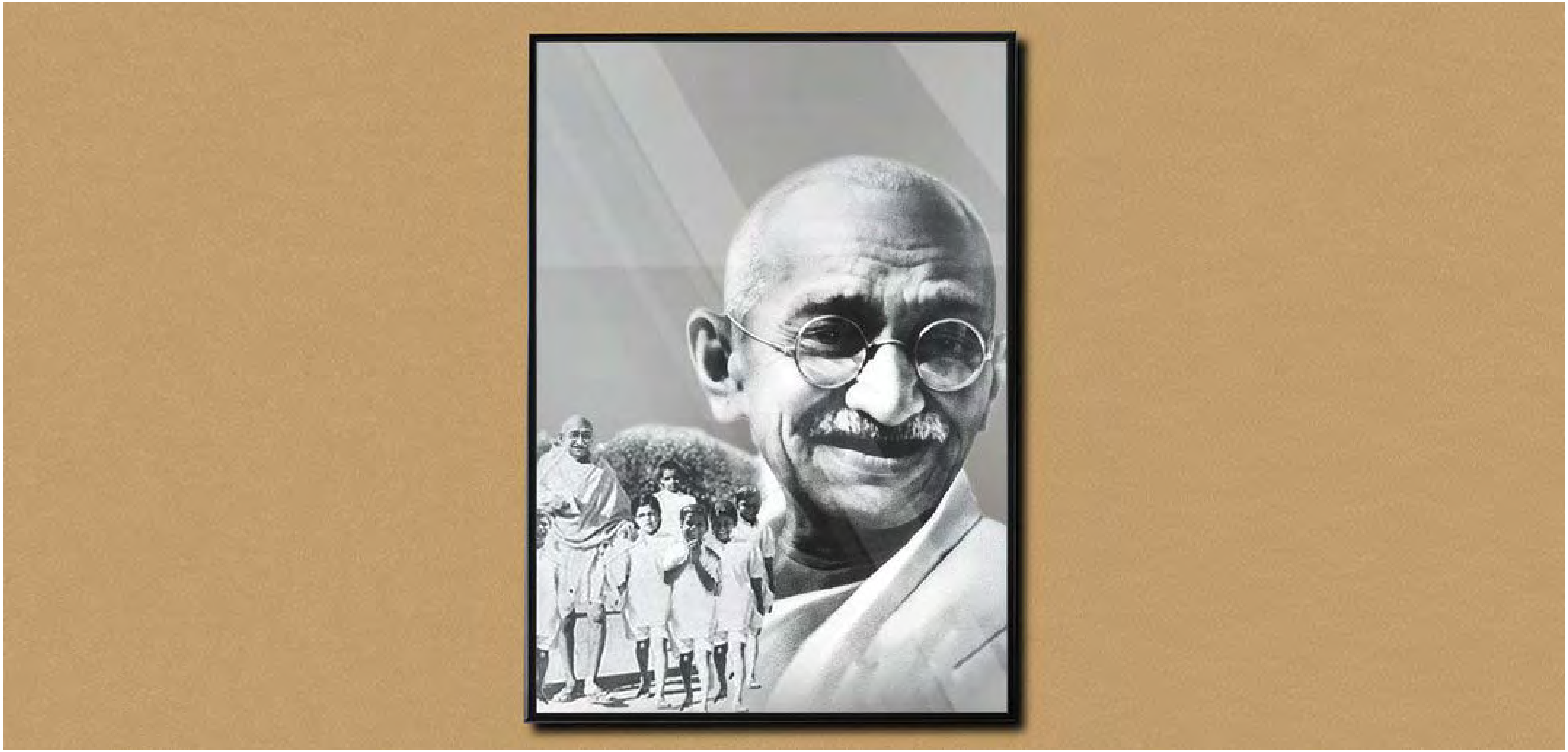

मोहनदास करमचंद गांधी

Author: Mrinalini Sarabhai
Illustrator: Goutam Sen
Translator: Arvind Gupta

पठन स्तर ४

समर्पण: मेरी पोती अनाहिता को जिसने इस किताब को सबसे पहले पढ़ा और उस हर बच्चे को जो इस किताब को पढ़ेगा और बाद में शांति के लिए काम करने के लिए प्रेरित होगा.

प्रस्तावना:
पुस्तक के प्रिय युवा पाठकों, साथ में अनहिता भी,
गांधीजी के चार बेटे (बेटियां नहीं थीं, यह दुख की बात है) और पंद्रह पोते-पोती थे. मैं उनके आठ पोतों में से एक हूं. मैंने उन्हें यह कहते हुए सुन सकता हूँ: “मैं सबसे भाग्यशाली व्यक्ति था. इतने सारे अद्भुत लोगों ने मेरी मदद की. मेरी कहानी उनकी मित्रता और प्रेम का फल है. मेरे इन उल्लेखनीय सहायकों के बारे में तुम और जानकारी प्राप्त करो.”
तुम जो इस आकर्षक छोटी पुस्तक को पढ़ रहे हो, तुम ज़रूर उन सभी साराभाईयों के बारे में और जानने की कोशिश करना, जो विशेष और असामान्य थे और जिन्होंने गांधी जी की मदद की थी. उनमें उद्योगपति अंबालाल साराभाई शामिल हैं जिनकी पुत्रवधू, महान नृत्यांगना मृणालिनी ने इस पुस्तक को लिखा है. तुम अंबालालजी की पत्नी सरलादेवी, उनकी बहन अनसूया और उनकी बेटी मृदुला के बारे में भी और जानने की कोशिश करना.
तुम भारत को बेहतर समझोगे, उसे अधिक प्रेम करोगे, जब तुम हमारे देश के पश्चिमी भाग के इन असाधारण व्यक्तियों के बारे में जानोगे.
तुम्हें इस पुस्तक की लेखिका मृणालिनी के बारे में भी और जानने की कोशिश करनी चाहिए, जो दक्षिण भारत से आईं और उन्होंने विक्रम - अंबालाल के प्रतिभाशाली और दूरदर्शी बेटे से शादी की. तुम्हें यह भी पता चलेगा कि मृणालिनी ने, नृत्य में अपनी असाधारण प्रतिभा से हजारों लोगों को प्रशिक्षित किया है.
यह अद्भुत पुस्तक और इसकी मनमोहक कहानी तुम्हें अन्य रोमांचक कहानियों की ओर ले जाएगी - तुम्हारे आंतरिक जीवन की समृद्धि की ओर.
खुशियों की कामना के साथ, राजमोहन
गांधी

एक दिन गुजरात के पोरबंदर नामक एक छोटे से शहर में बड़ा उत्साह और आनंद था, क्योंकि उस रात वहां पर "हरिश्चंद्र" नाटक का मंचन होने वाला था. पूरे दिन, बच्चे नाटक की बात ही करते रहे.
उनमें से एक छोटा बच्चा अन्य की तुलना में अधिक उत्साहित था. उसने पहले ही उस कहानी के चित्र देखे थे. अब, एक नाटक समूह "हरिश्चंद्र" पर असली नाटक कर रहा था जिसका उसके दिल पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा. उसकी कहानी क्या थी? मैं तुम्हें बताती हूँ.
हरिश्चंद्र नामक एक महान राजा अयोध्या पर राज करते थे. वो एक अच्छे राजा थे और अपनी प्रजा की देखभाल करते थे. उनका सबसे अच्छा गुण था कि वो सच्चाई को बेहद महत्वपूर्ण मानते थे. वो मानते थे सबसे कठिन परिस्थितियों में भी इंसान को कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए.

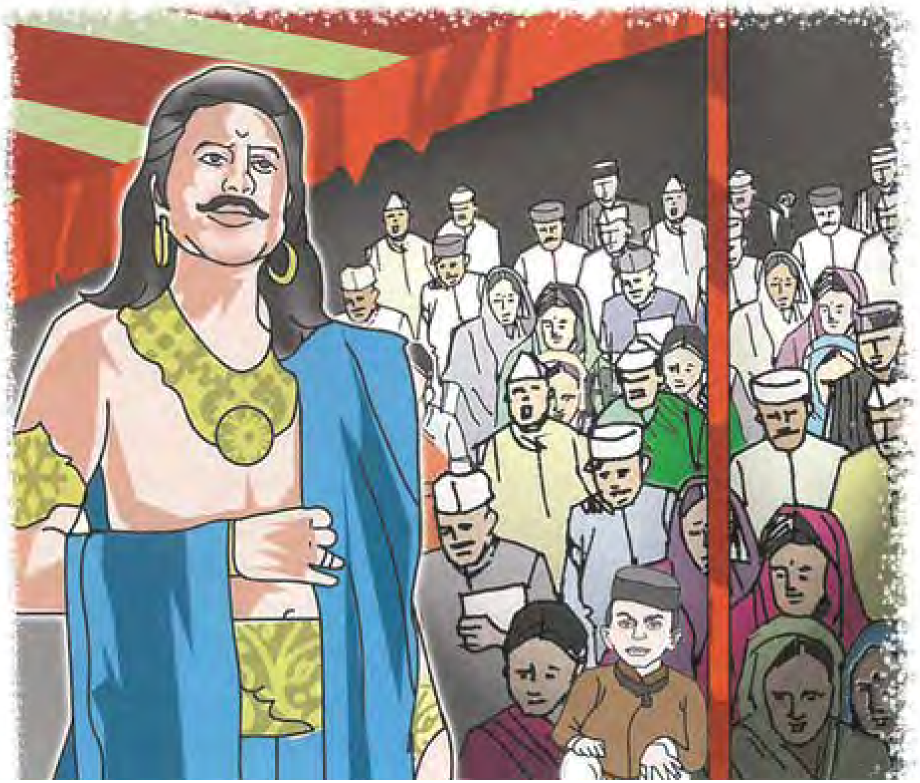

उस रात नाटक की प्रस्तुति बहुत वास्तविक थी. नाटक देखने के बाद उस छोटे बच्चे ने खुद से एक प्रतिज्ञा की, कि वो कभी भी झूठ नहीं बोलेगा. यह उसके जीवन का एक संस्कार बन गया.

(फोटो) घर का बाहरी दृश्य.

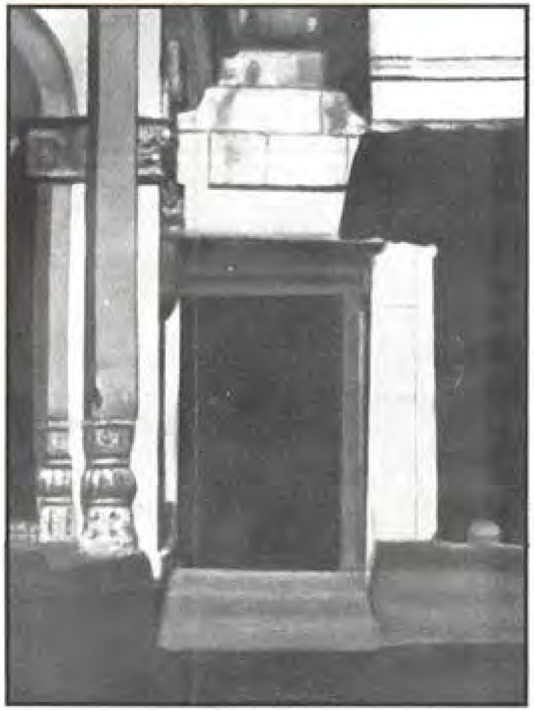

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर, कथाईवाड़ में इस घर में हुआ था.

यह लड़का कौन था? उसका नाम मोहनदास करमचंद गांधी था. वो एक गुजराती बनिया था. उनके पिता करमचंद गांधी थे जो पोरबंदर, राजकोट और वांकानेर के प्रधानमंत्री बने. वैसे वे पढ़े-लिखे नहीं थे, और वो काबा गांधी के नाम से भी जाने जाते थे, उन्होंने अपने अनुभवों से सीखा और फिर अपनी व्यावहारिक समझ बूझ से कई लोगों का मार्गदर्शन किया. लेकिन युवा मोहनदास के जीवन में उनकी माँ का सबसे बड़ा प्रभाव था.

वर्ष 1877 में राजकोट प्राथमिक विद्यालय
के छात्र के रूप में महात्मा गांधी.

मोहनदास सात साल की उम्र में स्कूल गया. तब वो बेहद शर्मीला था और किसी से बातचीत नहीं करता था. आमतौर पर वो स्कूल के बाद घर वापस चला आता था, वैसे वो कोई ख़ास होशियार नहीं था लेकिन वो कभी भी बेईमानी नहीं करता था. एक दिन, जब मिस्टर जाइल्स नाम के एक स्कूल इंस्पेक्टर उसकी कक्षा में आए तो उन्होंने बच्चों से कुछ शब्द लिखने को कहा. मोहन अंग्रेजी का "केटल" शब्द नहीं लिख पाया. तब क्लास टीचर ने मोहन से दूसरे बच्चे की कॉपी से नक़ल करने को कहा. मोहन ने वो करने से मना कर दिया. उसने अपने क्लास में कभी नकल नहीं की.

मोहनदास जब हाई स्कूल में थे तभी उनकी शादी हो गई. उसके बावज़ूद उन्होंने पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन किया. एक पूरा साल खोने के बावजूद, वो प्रमाण पत्र और छात्रवृत्ति जीतने में भी कामयाब रहे. पिता की मृत्यु के बाद वो भावनगर में एक कॉलेज में भर्ती हुए लेकिन वो अपनी पढ़ाई से बहुत संतुष्ट नहीं थे.

वर्ष 1913 में दक्षिण अफ्रीका में
सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुए.

एक मित्र ने उनसे कहा कि अगर वो एक अच्छा बैरिस्टर बनना चाहते हैं, तो उन्हें इंग्लैंड में जाकर पढ़ाई करनी चाहिए.

इस नौजवान के लिए इंग्लैंड जाने के लिए पैसे का इंतजाम करना बेहद मुश्किल था.

उन दिनों में, समुद्र पार करने का डर तो था ही, साथ में जाति से बहिष्कृत किए जाने का भी डर था. लेकिन जब वो अठारह वर्ष के हुए, तब मोहनदास अपने समुदाय के विरोध के बावजूद, विदेश चले गए.

इस युवा ने लंदन में भोजन की बड़ी परेशानी महसूस की. वहां पर बहुत कम शाकाहारी भोजन उपलब्ध था. "वहां सब कुछ अजीब था - लोग, उनके तौर-तरीके और यहां तक कि वहां के घर भी," उन्होंने बाद में लिखा.

1890 में, वेजीटेरियन सोसाइटी,
लंदन के एक सदस्य के रूप में.

सौभाग्य से उन्हें लंदन में एक शाकाहारी रेस्तरां मिला. वहां का खाना उन्हें पसंद आया. वहां पर उन्हें हेनरी साल्ट की लिखी एक पुस्तक भी मिली जिसका नाम था, "ए प्ली फॉर वेजीटेरियनिज़्म" (शाकाहारी भोजन की दलील).

अब उन्हें एक नया "कारण" मिल गया था. अब उन्होंने आहार और स्वास्थ्य पर किताबें पढ़ीं, जिनके आधार पर वर्षों बाद उन्होंने कई प्रयोग किए.

1891 में उनकी घर वापसी एक दुखद घटना रही, क्योंकि उनकी प्रिय मां का निधन हो गया था. फिर एक वकील की हैसियत से उन्होंने बम्बई के उच्च न्यायालय में प्रैक्टिस शुरू की. पर उस ईमानदार युवक के लिए वो पूरी तरह से निराशा का अनुभव रहा. आखिर में जब उसे एक केस मिला, तो वो इतना घबरा गया कि जज के सामने कुछ बोल तक न सका. उसके बाद वो कभी कोर्ट नहीं गया और राजकोट लौट आया लेकिन वहां भी उसे कोई काम नहीं मिला.

इस हताश अवस्था में वह खुद को असहाय महसूस कर रहा था. उसे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था. सौभाग्य से, एक मुस्लिम फर्म ने उसे बचाया. एक बड़े मुकदमे के केस में, उसे एक मुवक्किल को कानूनी सलाह देने के लिए दक्षिण अफ्रीका बुलाया गया. वहां एक साल की नौकरी थी और पारिश्रमिक भी अच्छा था. गांधी नौकरी के अभाव में दुखी थे, इसलिए उन्होंने उसे तुरंत स्वीकार किया. अप्रैल 1893 में वो डरबन, दक्षिण अफ्रीका के लिए जहाज़ से रवाना हुए.

वर्ष 1911 में, दक्षिण अफ्रीका में, रेवरेंड सी. एफ. एंड्रयूज और मिस्टर पियर्सन के साथ.

गांधी ने दक्षिण अफ्रीका जाने का फैसला क्यों किया? क्योंकि वे परिवार के लिए पैसा कमाना और इंग्लैंड जाने के लिए उधार लिए पैसे चुकाना चाहते थे. लेकिन तकदीर ने उनके जीवन को कई आश्चर्यों से भरा था.

उनके मुवक्किल अब्दुल्ला शेठ ने, डरबन में उनकी अगवानी की. युवा वकील ने जल्द ही महसूस किया कि दक्षिण अफ्रीका के गोरे लोग, इंग्लैंड के गोरे लोगों से बहुत अलग थे. वे डच और अंग्रेजों का मिश्रण थे. वे सभी गैर-गोरों की अवमानना करते थे, और उन्हें "कुली" कहकर बुलाते थे.

जल्द ही, युवा गांधी ने इस जहर का स्वाद चखा. जब वो कोर्ट में उपस्थित हुए तो मजिस्ट्रेट ने उनसे उनकी पगड़ी हटाने को कहा, जिसे उन्होंने इंकार किया. उन्होंने इस अपमान की खबर समाचार पत्रों में भी लिखी, जिससे उन्हें "अनिच्छुक आगंतुक" का खिताब मिला.

यहां से गांधी की स्वतंत्रता की लड़ाई की कहानी शुरू हुई. वो एक मुकदमे के लिए प्रिटोरिया जा रहे थे, प्रिटोरिया, अफ्रीका के बोअर्स गणराज्य की राजधानी थी. वो प्रथम श्रेणी का टिकट खरीदकर ट्रेन में चढ़े. उसी शाम, एक गोरे आदमी ने भी उसी डिब्बे में प्रवेश किया. एक "काले" (सभी गैर-गोरों को "काला" कहा जाता था) आदमी को देखकर उसने उसे बाहर निकालने के लिए गार्ड को बुलाया.

गांधी ने उतरने से इंकार किया, क्योंकि उनके पास एक वैध टिकट था. फिर गांधी को बेइज़्ज़ती से, धक्का देकर, उनके सामान के साथ डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया. रात की ठंड में वो कांप रहे थे, और बेहद दुखी थे. वहां उन्होंने अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए दृढ़ संकल्प लिया. पर अंधेरे की वो रात पूरी दुनिया में एक नई रोशनी लाई. वो सौम्य, कमजोर शरीर का आदमी, नस्लवाद से टक्कर लेने के लिए निडर बना. उस यात्रा में गांधी ने बड़े साहस के साथ गोरे लोगों के कायरतापूर्ण हमले को सहन किया.

इस अपमानजनक घटना के बाद गांधी ने प्रिटोरिया पहुंचकर भारतीय समुदाय की एक बैठक बुलाई. पहली बार उन्होंने बिना घबराए एक सार्वजनिक भाषण दिया. उन्होंने अपने हमवतनों से अनुरोध किया कि वे अपने व्यवसाय को ईमानदारी से करें, धर्म या जाति के बावजूद एकजुट हों, और आदतों में साफ-सुथरे हों. वो गांधी का पहला सार्वजनिक भाषण था जिसमें उनकी आवाज़ लड़खड़ाई नहीं थी. उस भाषण से गांधी, दलितों, देश के नागरिकों, और उन पुरुषों और महिलाओं के नेता बन गए जो “गोरे नहीं थे.

शायद प्रिटोरिया के अपने उस भाषण के समय गांधी ने महसूस किया कि उन्हें पढ़ाना पसंद था, उपदेश देना नहीं!
यही वो अवसर था जब गांधी सामाजिक न्याय के अपने जुनून के साथ लोगों का मार्गदर्शन करने वाले एक नेता बन गए.
उन्हें पता था कि वो अपने मुवक्किल की मदद करने के लिए प्रिटोरिया आए थे. वो दोनों पक्षों के बीच में मध्यस्थता करवाकर मुकदमे को सुलझाने में सफल रहे. इस सफलता से वो बहुत प्रसन्न हुए. “आज मेरी ख़ुशी असीम है. आज मैंने कानून का सच्चा मर्म सीखा है. आज मैंने लोगों की प्रकृति का बेहतर पक्ष खोजा है और मैंने लोगों के दिलों में झांकना सीखा है."

1914 में पत्नी के साथ लंदन में.

गांधी ने अपना काम पूरा कर लिया था और अब वो भारत लौटने के लिए तैयार थे. लेकिन वो नहीं हुआ. भारतीयों के वोट छीनने का एक बिल आया, जिसमें 10,000 यूरोपीय लोगों के खिलाफ मतदान करने के लिए केवल 250 भारतीय ही योग्य पाए गए थे. बिल यह सुनिश्चित करता कि कोई भी भारतीय कोई चुनाव नहीं जीत पाता. गांधी अब भारत नहीं जा सकते थे. वो भारतीय समुदाय के एक वकील-नेता बन गए थे और लोगों ने गांधी को वापस जाने नहीं दिया.

यह निर्णय लोगों ने मिलकर लिया था और उन्होंने गांधी के जीवन-यापन के लिए एक नियमित फीस की व्यवस्था भी की थी. एक वकील के रूप में काम करने के लिए उन्होंने लॉ सोसायटी में अपनी अर्ज़ी दी. पर गोरों के विरोध के बावजूद, उनका नाम रजिस्टर हुआ. लेकिन कोर्ट में उन्हें पगड़ी पहनने की अनुमति नहीं दी. गांधी ने उस पर कोई आपत्ति भी नहीं जताई, क्योंकि उनका दिमाग अब बड़े मुद्दों पर केंद्रित था.

उन्होंने सभी समुदायों को एक-साथ लाते हुए "नटाल इंडियन कांग्रेस" का गठन किया. उसके दो नियम काफी दिलचस्प थे. सभी को "मिस्टर" कहकर संबोधित करना था और धूम्रपान पर पाबन्दी थी.

शुरुआत में, ज्यादातर सदस्य अमीर भारतीय ही थे. बाद में एक तमिल व्यक्ति ने उसे चुनौती दी. एक दिन, फटे कपड़े पहने, टूटे हुए दांत और मुंह से खून बहता हुआ एक आदमी गांधी के ऑफिस में आया. एक गोरे मालिक ने उसकी बुरी तरह से पिटाई की थी. गांधी, गोरे मालिक को अदालत में ले गए और उन्होंने उस गरीब आदमी न्याय दिलवाया. अब गिरमिटिया मजदूरों को, अपने बचाव के लिए एक नया दोस्त मिल गया था.

गांधीजी ने अक्सर दोहराया, "मेरे लिए यह हमेशा एक रहस्य रहा है कि लोग अपने साथियों के अपमान से, खुद को सम्मानित कैसे महसूस कर सकते हैं."

जेल से छूटने के बाद 22 दिसंबर 1913 को मारिट्बर्ग स्टेशन पर
एच. कालेनबाख, जी. इसाक और श्रीमती पोलाक के साथ महात्मा गांधी (बाएं).

दक्षिण अफ्रीकी संघर्ष के अंतिम चरण में अग्रणी पार्टी. महात्मा गांधी बाएं से दूसरे स्थान पर बैठे हैं.

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का अभियान बहुत महत्वपूर्ण था और उन्होंने वहां रहने का फैसला किया. लेकिन उनका परिवार अभी भी भारत में था, इसलिए गांधी, छह महीने की छुट्टी लेकर, जून 1896 में भारत के लिए रवाना हुए. जहाज पर यात्रा के दौरान उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अपने संघर्ष के बारे में लिखा. वो लेख इतना लोकप्रिय हुआ कि उस पर्चे की 20,000 से अधिक प्रतियां छपीं. हरे रंग के कवर के कारण, उसे "गांधी के ग्रीन-पैम्फलेट" के नाम में जाना जाता है.

राजकोट में घर में प्लेग का डर था. उन्होंने वहां कई घरों का दौरा किया और उनके गंदे शौचालयों की जांच की. लोगों को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई. गांधी ने एक बहुत महत्वपूर्ण बात पाई. "अछूत" लोगों के शौचालय सबसे साफ़ थे!

भारत में उनकी मुलाकात कई मशहूर हस्तियों से हुई. उनमें सर फ़िरोजशाह मेहता थे, जिन्हें बॉम्बे (मुंबई) का बेताज बादशाह कहा जाता था. साथ में वो प्रसिद्ध देशभक्त लोकमान्य तिलक और गोपालकृष्ण गोखले से भी मिले. गोखले का जातिवाद और अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष और शिक्षा पर बल से गांधी बहुत प्रभावित हुए. भारत के शहरों की यात्रा पूरी करने से पहले ही उन्हें दक्षिण अफ्रीका लौटने का बुलावा आया. उनके दोस्त दादा अब्दुल्ला ने उनकी यात्रा की व्यवस्था की. इस बार गांधी ने "कोर्टलैंड" जहाज़ पर अपने परिवार के साथ यात्रा की.

डरबन में महात्मा गांधी की अंतिम तस्वीर, उनकी पत्नी और कई दोस्तों के साथ.

दक्षिण अफ्रीका में गोरे, गांधी के ग्रीन-पैम्फलेट से बहुत गुस्सा थे और उन्होंने उनके बारे में उल्टी-सीधी अफवाहें फैलाईं थीं. जब उन्होंने गांधी के लौटने की बात सुनी, तो उन्होंने सभी यात्रियों को समुद्र में फेंकने की धमकी दी! लेकिन अब्दुल्ला और उनके दोस्तों ने यह सुनिश्चित किया कि गांधी को छोड़कर बाकी सभी लोग जहाज़ से सुरक्षित उतरे. अटॉर्नी जनरल का आदेश था कि गांधी सबसे बाद में उतरें. लेकिन दादा अब्दुल्ला के कानूनी सलाहकार ने अन्यथा सोचा और उन्होंने श्रीमती गांधी और बच्चों के लिए अलग से एक गाड़ी का इंतज़ाम किया.

लेकिन जब गांधी जहाज़ से नीचे उतरे तो उन्हें पहचान लिया गया और सफेद भीड़ ने उन पर पत्थर और सड़े अंडे फेंके. उनकी तब तक जमकर पिटाई की जब तक गांधी बेहोश नहीं हुए. सौभाग्य से, एक अंग्रेज महिला उनको बचने के लिए दौड़ी और वो उन्हें एक दोस्त के सुरक्षित घर में ले गई. लेकिन वहां भी जंगली भीड़ चीखती-चिल्लाती रही. फिर गांधी, को एक कांस्टेबल के कपड़े पहनाकर, दो जासूसों की मदद से वहां से मिकाला गया.

इंग्लैंड में एक निर्दोष व्यक्ति पर इस अनुचित हमले की व्यापक चर्चा हुई. उसके बाद ब्रिटिश राज्य सचिव, जोसेफ चेम्बरलेन ने नेटाल को एक तार भेजकर जिम्मेदार लोगों को दंडित करने का आदेश दिया. जब गांधी ने इस आदेश के बारे में सुना, तो उन्होंने कोई भी मुकदमा दायर करने से इंकार किया. गांधी के अनुसार वे लोग "बहकावे" में थे और वो ज़रूर अपने व्यवहार का पश्चाताप करेंगे.

"कुली बैरिस्टर" अब सही स्थान पर आ पहुंचे थे. उनका अहिंसक संघर्ष अब सही मायने में शुरू हो गया था. उनके संगठन, नेटल इंडियन कांग्रेस ने "इंडियन ओपिनियन" नामक एक साप्ताहिक पत्रिका भी शुरू कर दी थी.

साप्ताहिक पत्रिका उनका बहुत समय ले लेती थी. पर जब प्लेग फैला तो गांधी रोगियों की मदद करने के लिए दौड़े. उन्होंने पीड़ितों की देखभाल की और बीमारों पर व्यक्तिगत ध्यान दिया.

उन्होंने साप्ताहिक पत्रिका का कार्यभार एक अंग्रेज - अल्बर्ट वेस्ट को सौंप दिया, जो गांधी के आजीवन मित्र बने रहे. गांधी सभी प्रतिकूल स्थितियों का सामना करने में अपने साहस के लिए धीरे-धीरे गोरे लोगों की प्रशंसा भी हासिल कर रहे थे.

एक अन्य अंग्रेज मित्र, हेनरी पोलाक ने गांधी को रस्किन की लिखी एक पुस्तक दी जिसका नाम था "अंटू दिस लास्ट". उस किताब में गांधी ने अपने स्वयं के विचारों और दृढ़ विश्वासों को पाया. बरसों बाद उन्होंने गुजराती में उस किताब का अनुवाद भी किया और उसे "सर्वोदय" नाम दिया. पुस्तक से प्रेरणा पाकर उन्होंने एक पुराना खेत खरीदा, और वहां पर अखबार के दफ्तर को स्थानांतरित किया. धीरे-धीरे वो फार्म एक कॉलोनी बन गया और वहां से तीन मील दूर स्थित स्टेशन के नाम पर उसे "फीनिक्स कॉलोनी" कहा जाने लगा. गांधी न केवल एक वकील थे, वो मानव अधिकारों के लिए लड़ने वाले, हर बुराई को रोकने वाले, बल्कि भोजन के साथ प्रयोग करने वाले एक वैज्ञानिक भी थे. पोलाक ने लिखा, “चक्की पीसते हुए वो बातें करते और हँसते थे. रोटी बनाने के लिए गेहूं पीसा जाता था जिसमें सभी लोग भाग लेते थे. इसलिए हंसी फीनिक्स के घर में आसानी से समाई.”

स्वामी दयानंद सरस्वती और अपने कई मित्रों के साथ.

फिर अचानक एक दिन निर्णय लिया गया कि कोई भी नमक का उपयोग नहीं करेगा, और बाद में चीनी का भी. कच्चे प्याज के महीन टुकड़ों को रात के खाने में रक्त शुद्धी के लिए परोसा गया! भोजन के साथ गांधी के प्रयोग पूरे जीवन भर चले. बाद में, स्वस्थ जीवन के लिए मिट्टी चिकित्सा भी अपनाई गई.

फरवरी 1906 में, ज़ूलू जनजाति के लोग, जिन्होंने सदियों से क्रूरता सही थी, उन्होंने बोअर्स के खिलाफ विद्रोह शुरू किया. गोरे फिर से अश्वेतों को "अमानवीय बर्बरता" के साथ उत्पीड़न करने, और उनका अपमान और पिटाई के क्रूर खेल में जुट गए. प्रचंड हिंसा हुई, लेकिन वो बड़ा संकट तब टला जब गांधी के नेतृत्व में भारतीय लोग उनके बचाव में आगे आए, और उन्होंने ज़ूलू जनजाति के लोगों की सुरक्षा की, जिसका उन्होंने बहुत आभारी माना.

ज़ूलू घायलों की तीमारदारी एक ज़बरदस्त और कठिन अनुभव था. उसके लिए स्वयंसेवकों ने अक्सर, स्ट्रेचर और दवाओं के साथ पचास मील की दूरी तय की. इंसान के वहशीपन की वो एक क्रूर मिसाल थी. इस अनुभव के बाद गांधी ने यह निर्णय लिया कि उनका जीवन मानवता को समर्पित होगा और वो अपनी 'आंतरिक ज्योति' का पालन करेंगे और कभी भी सत्य और ईमानदारी के पथ से विचलित नहीं होंगे.

गोरे शासक गांधी द्वारा ज़ूलू लोगों की मदद से बेहद गुस्सा हुए और तब उन्होंने "भूरे लोगों" को सबक सिखाने का फैसला लिया. कोई भी भारतीय, उन्होंने एक आदेश निकाला जो ट्रांसवाल में प्रवेश करेगा उसे एक कार्ड पर अपना नाम, उम्र और अंगूठे की छाप दर्ज करानी होगी. भारतीयों ने इसे "काला कानून" करार दिया, और वे इस नए कानून से बहुत नाराज हुए.

गांधी ने तुरंत उसका जवाब दिया. उन्होंने भारतीय समुदाय की एक विशाल जनसभा बुलाई. उन्होंने कहा, "मेरे लिए केवल एक ही रास्ता खुला है और वो है मरना, लेकिन मैं इस कानून के सामने अपने घुटने नहीं टेकूंगा, भले ही बाकी सब मुझे अकेला छोड़ दें," उन्होंने अपने हमवतनों से कहा.

जैसा कि उन्होंने हमेशा अपने जीवन में किया, सबसे पहले उन्होंने अधिकारियों से बातचीत करने की कोशिश की. लेकिन वे अड़े रहे और उन्होंने इंकार किया. गांधी, जिनका अभी भी ब्रिटिश न्याय में विश्वास था फिर जहाज़ द्वारा इंग्लैंड गए. इंग्लैंड की सरकार, जिसे वो उदार समझते थे, ने भी उनकी बात नहीं सुनी. ट्रांसवाल में जल्द ही स्व-शासन लागू होने वाला था. वहां पर अंग्रेज सरकार, भारतीय आबादी के बजाए गोरों को खुश करना चाहती थी.

ट्रांसवाल सरकार ने जो पहला काम किया वो था उस काले-बिल को पास करना. अब भारतीयों को ब्रिटिश सरकार के पाखंड का एहसास हुआ. फिर भारतीयों ने पंजीकरण नहीं कराने का फैसला किया जिससे सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया और निष्कासित किया. अंत में, जनरल स्मट्स ने गांधी को गिरफ्तार किया और उन्हें जाँच के लिए उसी कोर्ट में लाया गया जहाँ गांधी कभी बैरिस्टर थे! गांधी को जोहानसबर्ग जेल में तीन महीने की सजा सुनाई गई. गांधी ने उस आंदोलन को "सविनय अवज्ञा" (पैसिव रेजिस्टेंस) का नाम किया. वो एक नायब संघर्ष था जिसमें लोग सज़ा का प्रतिरोध नहीं करते थे. बाद में उन्होंने उसका नाम बदलकर उस "सिविल रेजिस्टेंस" और अंत में उसे "सत्याग्रह" बुलाया जिसका अर्थ था "सत्य की राह पर चलना."

संस्कृत में, सत्य का अर्थ होता है "सच" और आग्रह का "इच्छा या प्रयास". गांधी ने उसे सत्य का प्रतिशोध बताया, विरोधी को पीड़ा पहुंचाकर नहीं, बल्कि आत्म-बलिदान द्वारा. धैर्य और विश्वास सबसे ज़्यादा खुद के लिए सच होता है. इसलिए, सत्याग्रही सच्चाई को बरक़रार रखने के लिए मौका आने पर मौत भी झेलता है, जो वास्तव में ताकतवरों का "हथियार" है. पर सत्याग्रही किसी भी रूप में हिंसा की अनुमति नहीं देता है.

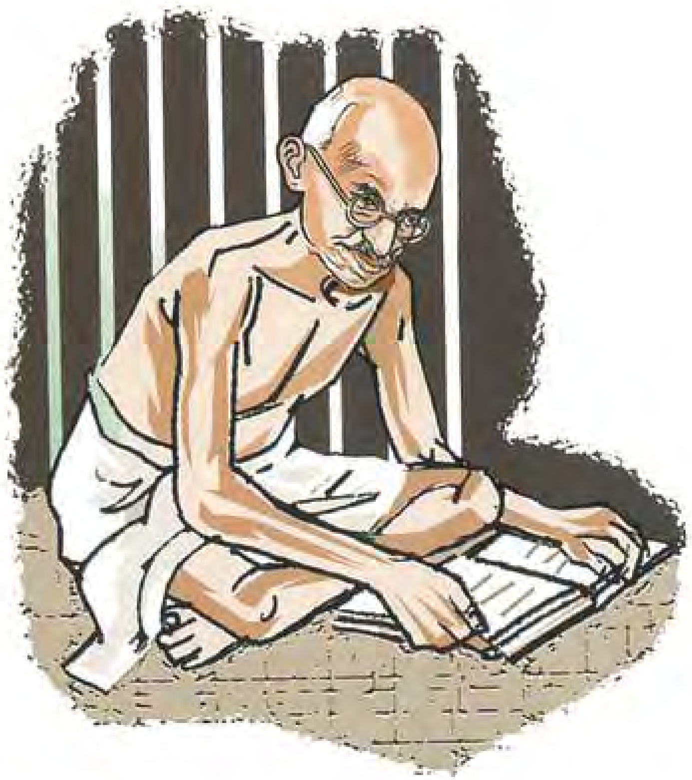

1914 में सरकार की ताकत को, सौम्यता के आगे झुकना पड़ा. काले-अधिनियम को रद्द किया गया और गैर-प्रतिरोध आंदोलन की जीत हुई. सत्याग्रह की जीत हुई और फिर पूरी सदी ही उसकी लगातार जीत हुई.

पहले सविनय अवज्ञा आंदोलन में भारतीयों ने अपने प्रमाण पत्रों को आग में जलाया था. वही आंदोलन भारत में कई वर्षों बाद दोहराया गया जब पूरे देश में लोगों ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई. एक और नया शब्द गढ़ा गया "हड़ताल" यानि स्ट्राइक, जिसमें लोग स्वेच्छा से अपने काम से गैरहाज़िर रहकर बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन करने लगे.

हालाँकि गांधी की हमेशा से साम्राज्यवादी ब्रिटिशों के साथ लड़ाई थी, लेकिन कुछ अंग्रेज़ उनके घनिष्ठ मित्र भी थे. जनरल स्मट्स द्वारा पंजीकरण विषय पर कुछ नरमी के बाद भी पठानों ने पंजीकरण से इंकार किया, और गांधी को बुरी तरह से घायल किया, तो उनके ईसाई दोस्त पादरी जोसेफ ड्यूक उन्हें अपने घर ले गए और उनका इलाज किया. जब जोसेफ ड्यूक ने "अवज्ञा आंदोलन" के बारे में पढ़ा तब से वो गांधी से मिलना चाहते थे. ड्यूक को एक लंबे तगड़े आदमी से मिलने की उम्मीद थी. पर उन्हें तब बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्होंने "एक छोटे, पतले-दुबले आदमी को देखा जिसके चेहरे पर मुस्कराहट थी और जिसकी एक नज़र किसी का भी दिल, एक तूफ़ान की तरह जीतने के लिए पर्याप्त थी."

सत्य और अहिंसा के इस आदमी ने जो भीषण कष्ट झेले, उनके बारे में हमारे लिए आज सोचना पाना भी संभव नहीं होगा.

स्मट्स के तहत ब्रिटिश अधिकारियों ने जेल में स्वयंसेवकों के साथ दुर्व्यवहार किया और उन्हें खूब मारा-पीटा. अक्सर, अन्य आपराधिक ज़ूलू कैदियों ने भी स्वयंसेवकों भी मारा और उन्हें गालियां दीं. गांधी को अदालत में ले जाते समय, उस महान आदमी को सजा के तौर पर कैदियों के कपड़े और हथकड़ी पहनाई गई. फिर भी, उसने कभी विरोध नहीं किया.

गांधी ने सुना कि उनकी पत्नी गंभीर रूप से बीमार थीं. फिर भी उन्होंने क्षमा नहीं मांगी. गांधी ने खुद को एक महान संघर्ष के लिए समर्पित किया था.

गांधी ने अपनी पत्नी को एक प्यार भरा पत्र लिखा जिसमें लिखा था, “मैंने अपना सभी कुछ सत्याग्रह को सौंप दिया है. मेरा संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं है. वो धार्मिक भी है और इसलिए काफी शुद्ध है.” तमाम भयानक अनुभवों के बावजूद, गांधी को अभी भी ब्रिटिश निष्पक्षता पर भरोसा था!

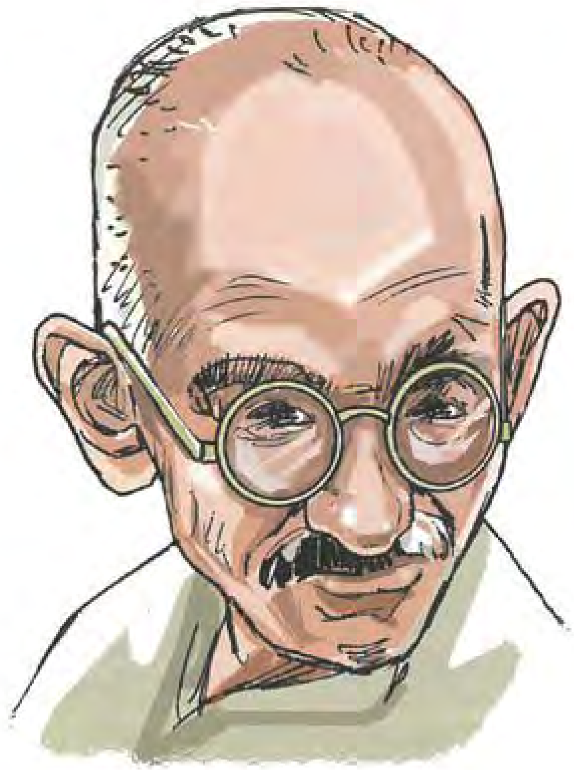

अंत में रिहा होने के बाद गांधी अन्य कुछ लोगों के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ इंग्लैंड गए. चर्चा में उन्हें ब्रिटिश सरकार से निष्पक्षता और न्याय की उम्मीद थी. पर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया और इस तरह उन्होंने एक अच्छा दोस्त खो दिया. हालांकि इंग्लैंड में गांधी के दोस्तों की कमी नहीं थी. उन्होंने महिलाओं को, समानता की लड़ाई में सबसे साहसी पाया. उन्होंने महिलाओं से ही सवज्ञा आंदोलन की कला सीखी. गांधी की पत्नी उनकी पहली "गुरु" थीं. वो अपने पति को ऐसा कुछ भी करने देती थीं जिसे वो सही न मानती हों. गांधी ने कहा, "वो सिर्फ निष्क्रिय रूप से मेरा विरोध करती थीं, और फिर मैं असहाय हो जाता था!"

बड़ी संख्या में मेहमान, गांधी से मिलने आते थे और वो उनके साथ अंग्रेजी चाय और मक्खन लगा टोस्ट साझा करते थे. वो अंग्रेजी सूट, रेशमी टोपी, कोट, और स्मार्ट जूते में फैशनेबल लगते थे. दक्षिण अफ्रीका में, उन्होंने अनौपचारिक कपड़े पहने, और फिर भारत आकर उन्होंने न्यूनतम कपड़े पहने - एक लंगोटी, शॉल, सैंडल और छड़ी.

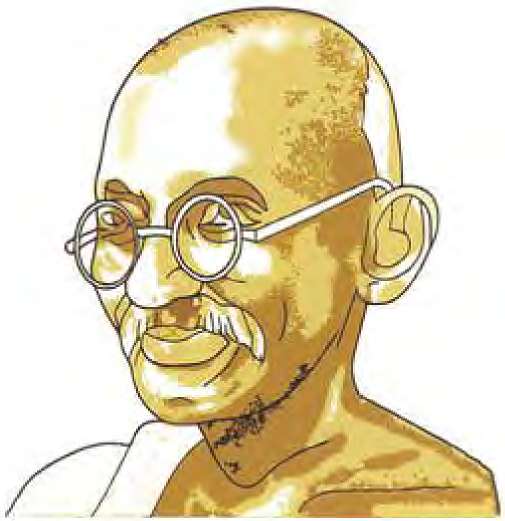

लंदन में, वो ऐसे कई युवा भारतीय क्रांतिकारियों से मिले जो स्वतंत्रता जीतने के लिए हिंसा को ही एकमात्र साधन मानते थे. मदनलाल ढींगरा ने एक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी थी. मदनलाल ने खुद को देशभक्त बताया और अदालत में एक उग्र भाषण दिया जिसकी विंस्टन चर्चिल ने भी प्रशंसा की. लेकिन गांधी ने इस कृत्य की निंदा की. “सिर्फ शराब या भांग ही किसी को शराबी नहीं बनाती है, एक पागल विचार भी ऐसा कर सकता है. मदनलाल ने एक कायर की तरह काम किया और सामाजिक सभा में एक आमंत्रित अतिथि की हत्या की."

वो युवा भारतीयों की पथभ्रष्ट देशभक्ति से चकित थे और उन्होंने लिखा, “विश्वासघात का कोई काम कभी भी किसी राष्ट्र को लाभ नहीं पहुँचा सकता है. भारत, हत्यारों के शासन से कुछ भी हासिल नहीं कर सकता है, चाहे वे काले हों या गोरे.”

हिंसा के इन कृत्यों ने गांधी को यह सोचने पर मजबूर किया कि वो अपने देश को कैसे मुक्त कराएं. "अगर आदमी को केवल यह अहसास हो कि अन्यायपूर्ण कानूनों को मानना अनुचित है, तो फिर कोई भी अत्याचार उसे गुलाम नहीं बना सकेगा."

इन कटु अनुभवों से, गांधी ने यह भी महसूस किया कि इंग्लैंड की स्थिति काफी दयनीय थी क्योंकि वो बात उन्होंने "हिंद स्वराज" नामक एक पुस्तिका में लिखी. वो आधुनिक जीवनशैली पर एक तीखी टिप्पिणी है - जिसमें उन्होंने रेलवे, मशीनरी और यहां तक कि इंग्लैंड की संसद की भी कड़ी निंदा की.

दक्षिण अफ्रीका में गोखले के साथ.

इस बीच, भारत में गोखले ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दयनीय स्थिति के खिलाफ आवाज उठाई, जिससे हर राष्ट्रीय भावना वाले आदमी में क्रोध और नाराजगी पैदा हुई.

जब 1912 में, गोखले ने दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया, तो गांधी ने उनके सचिव और करीबी साथी के रूप में काम किया. यहां तक कि उन्होंने गोखले द्वारा पहने गए अंगवस्त्रम को तह तक किया. जनरल बोथा और जनरल स्मट्स ने गोखले का अभिवादन किया और उन्हें आश्वासन दिया कि सभी समस्याओं को सुलझा लिया जाएगा और काले-कानून को रद्द कर दिया जाएगा. पर वे जल्द ही अपनी बात से मुकर गए और भारतीय शादियों में दखल देने लगे.

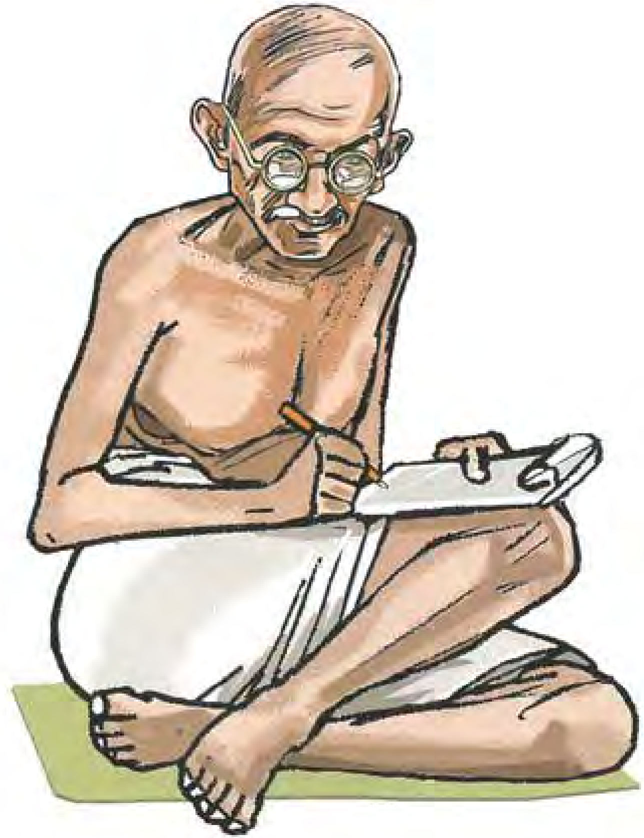

इसलिए 1913 में, गांधी ने भारतीयों का एक विरोध प्रदर्शन आयोजित किया. पुरुष और महिलाओं ने उसमें स्वेच्छा से भाग लिया. भारतीय खनिक हड़ताल पर गए, जिसके लिए उन्हें उनकी बस्तियों से बाहर निकाल दिया गया. गांधी ने ट्रांसवाल में जाने वाले लोगों की एक सेना बनाई जिसमें कई महिलाओं को उनके शिशुओं के साथ गिरफ्तार किया गया.
गांधी को उनकी सचिव मिस साहलेसिन सहित कई पश्चिमी सहयोगियों का समर्थन प्राप्त था. पर गांधी को भी नौ महीने जेल की सजा सुनाई गई. खनिकों को पीटा गया और फिर उन्हें भयानक परिस्थितियों में खानों में वापस भेजा गया. उस समय क्रूरता का ही माहौल था, लेकिन बहादुर लोगों ने उन क्रूर और अमानवीय कृत्यों को सहन किया.
जब यह खबर भारत में आई तो उससे खौफ की एक गहरी लहर फ़ैली. यहां तक कि भारत में ब्रिटिश वायसराय भी उससे भयभीत हुए और उन्होंने दक्षिण अफ्रीकी बर्बरता की निंदा की. उसके बाद इंग्लैंड की सरकार ने पहल की और जनरल स्मट्स से कैदियों को रिहा करने को कहा. इस बीच, गोखले ने संकट हल करने के लिए दो सम्मानित अंग्रेजों को भेजा. वे थे चार्ल्स फ्रीर एंड्रयूज और डब्ल्यू.डब्ल्यू. पियर्सन. दोनों पुरुष ईमानदार और समर्पित थे. जनरल स्मट्स ने सिर्फ गोरों का एक कमीशन गठित किया लेकिन गांधी को उस पर कोई विश्वास नहीं था इसलिए उन्होंने दुबारा आंदोलन शुरू किया.

पर तभी भाग्य ने हस्तक्षेप किया. दक्षिण अफ्रीकी रेलवे के गोरे कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी. जनरल स्मट्स ने मार्शल लॉ घोषित किया. तब गांधी ने, शांति बनाए रखने के लिए नागरिक प्रतिरोध को रोक दिया. गांधी का यही तरीका था. वो कमजोर दुश्मन पर कभी हमला नहीं करते थे. उन्होंने देखा कि जनरल स्मट्स मुश्किल में थे और उन्हें मदद की ज़रुरत थी. सद्भावना के इस कदम ने सभी को चकित किया. जनरल स्मट्स ने एक बैठक बुलाई जिसमें उन्होंने टैक्स को हटाया. भारतीय कानून के अनुसार विवाह को वैध बनाया गया और कई अन्य शिकायतों को भी हल किया गया.

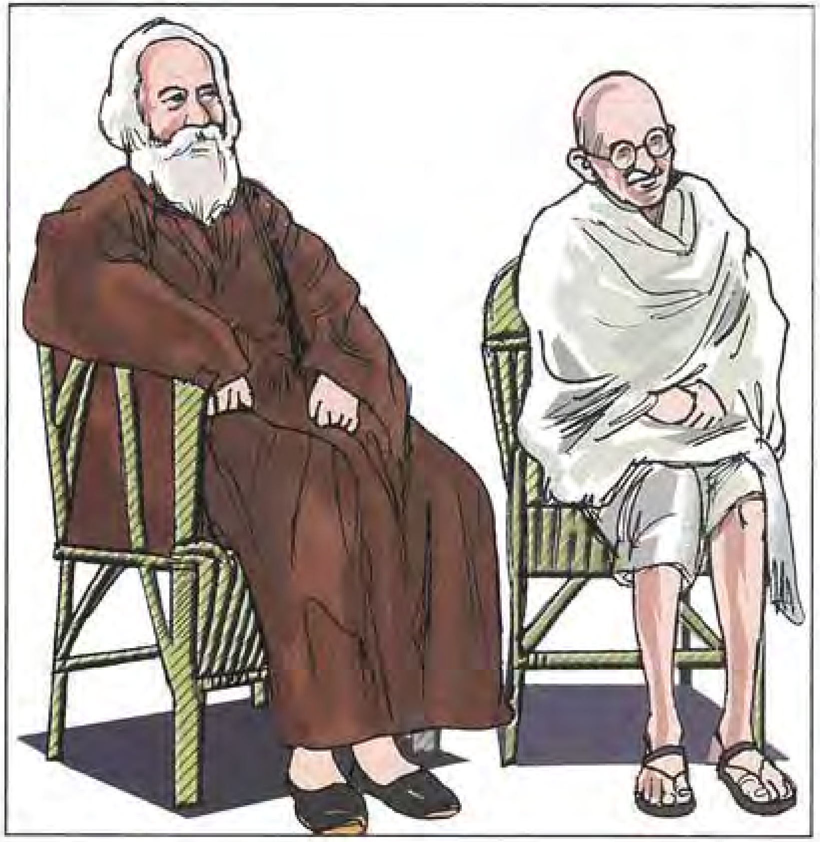

गांधी ने शांतिपूर्ण तरीके से, बिना किसी हिंसा और घृणा के जीत हासिल की. बिना किसी हत्या या रक्तपात के उन्होंने लड़ाई जीती. गांधी ने दक्षिण अफ्रिका में स्वतंत्रता के मैग्ना कार्टा को याद किया. उसमें आठ साल का संघर्ष और बहुत कष्ट शामिल थे. निष्क्रिय प्रतिरोध ने क्रूरता और खून-खराबे के खिलाफ जीत हासिल की थी!

दक्षिण अफ्रीका में दस घटनापूर्ण साल बिताने के बाद ही गांधी भारत लौटे. दक्षिण अफ्रीका में उनकी उपलब्धियों को भारत में बहुत कम लोग ही जानते थे. पर गोखले, जो गांधी के राजनीतिक गुरु थे, उन्होंने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और रबीन्द्रनाथ टैगोर ने शांतिनिकेतन के एक घर में उन्हें आश्रय दिया. कवि और सत्याग्रही के बीच दोस्ती के जिम्मेदार एक अंग्रेज़ थे. कवि टैगोर वो पहले इंसान थे जिन्होंने गांधी को पहली बार "महात्मा" के नाम से सम्बोधित किया था.

अफसोस की बात है कि जब गांधी पुणे के लिए रवाना हुए तब 19 फरवरी 1915 को गोखले की मृत्यु हो गई. उन्होंने अपने गुरु से वादा किया था कि वो भारत के कोने-कोने की यात्रा करेंगे और अपने देश के लोगों से मिलेंगे और उन्हें समझेंगे.

हरिद्वार में तीर्थ यात्रियों के पाखंड, भोजन की बर्बादी, गंदगी और लालच को देखते हुए, गांधी ने दिन में भोजन की केवल पांच चीज़ें खाने और अनावश्यक चीज़ें न खाने का फैसला लिया.

एक साल तक उन्होंने यात्रा की और फिर दक्षिण अफ्रीका की तरह एक स्थायी स्थान पर अपना डेरा डालने की सोची. उन्होंने अहमदाबाद चुना और साबरमती नदी के तट पर अपना आश्रम स्थापित किया. आश्रम से जुड़ने वालों ने जीवन के हर क्षेत्र में सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य पालन करने का संकल्प लिया.

अहमदाबाद, कपड़ा उद्योग का केंद्र था और एक धनी शहर था. कई उद्योगपतियों ने उदारता दिखाई और मदद का वादा किया. फिर उन्होंने सुना कि आश्रम में एक "अछूत परिवार" को भर्ती किया गया था. उसके बाद एक को छोड़कर बाकि सभी अमीरों ने अचानक दान बंद कर दिया. केलिको मिल्स के मालिक अंबालाल साराभाई ने आश्रम को बचाने के लिए गुमनाम रूप से एक बड़ी राशि दान में दी. दोनों आदमियों के दिल में भारतीय समाज में जाति व्यवस्था और अन्य असमानताओं को खत्म करने का जुनून था. साराभाई के परिवार और गांधी के बीच का यह संबंध जीवन भर चला.

गांधी ने सभी विवादों को हल किया और आश्रम में चुपचाप आकर बस गए. पर तभी एक बड़ा तूफान आया.

बिहार में चंपारण नाम की एक दूर जगह पर यूरोपियन मालिक, गरीब किसानों को उनकी जमीन पर इंडिगो उगाने को मजबूर कर रहे थे. उन्हें एक निश्चित मूल्य पर पूरी फसल बेचने को भी मजबूर किया जा रहा था. यह किसानों के लिए एक बहुत बड़ा बोझ साबित हुआ.

महात्मा गांधी के साथ मृदुला साराभाई.

गांधी चंपारण गए, और वो लोगों की दुर्दशा और गरीबी देखकर बहुत परेशान हुए. जब लोगों ने सुना कि एक "महात्मा" उनके जिले में आए हैं, तो उन्होंने उन्हें घेर लिया और उन्हें अपने संकट-समस्याएं सुनाने लगे. भीड़ इतनी बढ़ गई कि अंत में पुलिस अधीक्षक ने गांधी को चम्पारण छोड़ने का आदेश दिया. जब गांधी ने जब जाने से इंकार किया तो उन्हें अदालत में पेश होना पड़ा. गांधी के हजारों समर्थक भी कोर्ट में पहुंचे. फिर मजिस्ट्रेट ने मामले को स्थगित किया और बाद में केस वापस ले लिया गया.

चंपारण में गांधी जी ने सक्रिय सत्याग्रह या निष्क्रिय प्रतिरोध का पहला प्रयोग किया. उन्होंने ग्रामीणों को शिक्षित और उन्हें संगठित किया, उनके बच्चों को स्कूल भेजने, उन्हें स्वच्छ आदतों की शिक्षा दी और उन्हें अपनी समस्याओं के लिए लड़ना सिखाया.

संघर्ष के नतीजतन एक जांच आयोग नियुक्त हुआ जो एक समझौते पर पहुंचा. गांधी की ईमानदारी और दृढ़ता का प्रभाव ज़रूर पड़ा. कमेटी के सदस्य सर जॉर्ज रैनी ने टिप्पणी की, “मिस्टर गांधी को देखकर मुझे संत पॉल की याद आई.”

अहमदाबाद लौटने पर उन्होंने खुद को एक श्रमिक विवाद के बीच पाया. कपड़ा मिलों के 500 मज़दूरों ने, जो सभी समुदायों से थे, महंगाई भत्ते की मांग की क्योंकि उन्होंने शहर में प्लेग की महामारी के दौरान काम किया था. अनसूया साराभाई, जिन्होंने उनके बीच काम किया और जो उनकी शिकायतों से अवगत थीं ने याचिका पर हस्ताक्षर किए. उन्होंने अपने सगे भाई अंबालाल साराभाई के खिलाफ यह कदम उठाने से पहले गांधी को आशीर्वाद देने के लिए लिखा. सभी मिल मालिक गांधीजी का बहुत सम्मान करते थे.

हर शाम को एक बबूल के पेड़ के नीचे, जहाँ पुराना कालूपुर का दरवाज़ा था, वहां पर गांधी और अनसूया साराभाई मिलकर दोनों पक्षों को संतुष्ट करने वाला कोई समाधान खोजने की कोशिश करते थे.

पूरे मुद्दे का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने के बाद गांधी को मज़दूरों की मांग उचित लगी और उन्होंने मज़दूरों को हड़ताल करने की सलाह दी. इस प्रस्ताव पर सहमति तो बन गई, लेकिन नौकरी से निकाल दिए जाने और बिना काम के, भूखे रहने का डर भी था. गांधी ने मज़दूरों के डर को महसूस करते हुए खुद उपवास करने का फैसला किया. इससे श्रमिक और मिल मालिक दोनों भौचक्के रह गए. वे गांधी को उपवास करने की अनुमति नहीं दे सकते थे. तीन दिनों के बाद मिल मालिकों और श्रमिकों के बीच समझौता हुआ, जिससे सभी को राहत मिली.

गांधी का कथन कि कोई ऐसी कार्रवाई न की जाए जो विवाद में किसी भी पक्ष को नुकसान पहुंचाए, सही साबित हुई. कुछ मज़दूरों ने उस घटना पर कवितायें भी लिखीं और उसकी प्रशंसा की.

सभी अभियानों के बावजूद अंग्रेजों में, गांधी का विश्वास अब भी बरकरार था. 1918 में जर्मनी के खिलाफ युद्ध शुरू हुआ जिसमें ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सैनिकों को भर्ती करने के लिए एक अभियान शुरू किया. दिल्ली में युद्ध पर हुए एक सम्मेलन में, भारत के वायसराय ने गांधी को आमंत्रित किया. गांधी, जो अफ्रीका के अनुभवों से गुजरे थे, अभी भी ब्रिटिश न्याय भावना में विश्वास रखते थे. उन्होंने अपने देशवासियों से सेना में भर्ती होने की अपील की. जैसा कि उन्होंने अपने दोस्त पोलाक को लिखा, "मेरा भर्ती अभियान एक धार्मिक अनुष्ठान है जो मैंने अहिंसा के लिए किया है. मुझे लगता है कि अब भारत ने संघर्ष करने की शक्ति खो दी है. उसे फिर से सत्ता हासिल करनी चाहिए तभी वो बढ़ती हुई दुनिया को अहिंसा के सिद्धांत तक ले जा पाएगी.”

ब्रिटेन ने भारतीय सैनिकों की मदद से युद्ध जीता. लेकिन गांधी का ब्रिटिश न्याय में विश्वास जल्द ही भंग हुआ. सरकार ने रौलट एक्ट जारी किया जिसके तहत किसी को भी बिना ट्रायल के संदिग्ध आतंकवाद बताकर सरकार जेल में डाल सकती थी. यह एक निर्दयी कानून था, और उससे भारतीय लोग बहुत नाराज हुए. गांधी उस बिल पर बहस सुनने के लिए दिल्ली गए जहां भारतीय वक्ताओं ने उसे दुष्टतापूर्ण करार किया और राज्यपाल से उसे वापस लेने का अनुरोध किया. गांधी ने तब वाइसराय की ओर नज़र उठाई, तो देखा कि सुनने की बजाए वो शायद गहरी नींद में सोए थे! रौलट बिल ने एक उद्देश्य की पूर्ति की. शायद वो भाग्य का हस्तक्षेप ही था, क्योंकि उससे स्वतंत्रता के लिए गांधी के संघर्ष का रास्ता तैयार हुआ. इस अधिनियम में नागरिकों को गिरफ्तार करने और उन्हें बिना किसी ट्रायल के कैद करने का प्रावधान था. उसने स्वतंत्रता के सभी प्रयासों को रोकने की कोशिश की. उस क्षण से लेकर अपने जीवन के अंत तक, गांधीजी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद से पूर्ण स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया.

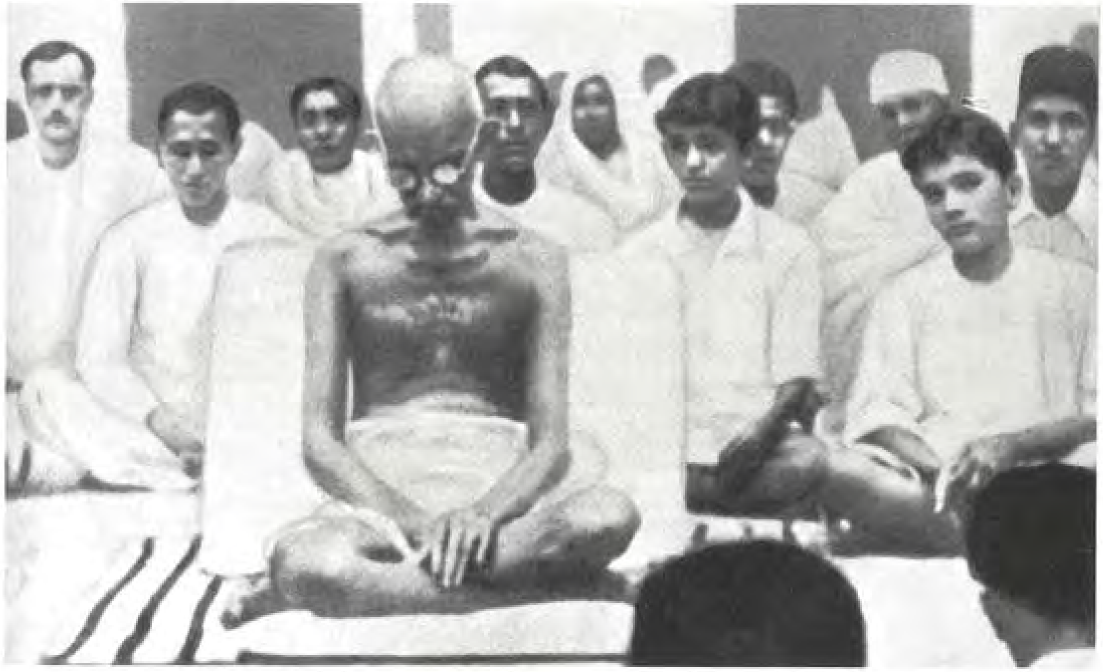

साबरमती में, जुलाई 1933 को, व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा
(सिविल डिसओबेडिअन्स) अभियान का उद्घाटन.

वो एक अखिल भारतीय संघर्ष था और समस्त भारत को अहिंसात्मक तरीके से उस सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेना था. गांधीजी ने तय किया कि अब उन्हें दक्षिण भारत जाकर वहां के नागरिकों का समर्थन जुटाना चाहिए. वहां वो एक उल्लेखनीय व्यक्ति - सी. राजगोपालाचारी से मिले - जो एक कर्मठ कार्यकर्ता थे और बाद में सहयोगी बने. राजाजी के घर पर ही गांधी ने "राष्ट्रीय दिवस" घोषित करने की बात सोची. उस दिन कोई भी सरकार का सहयोग नहीं करेगा और उपवास और प्रार्थना में अपना समय बिताएगा.

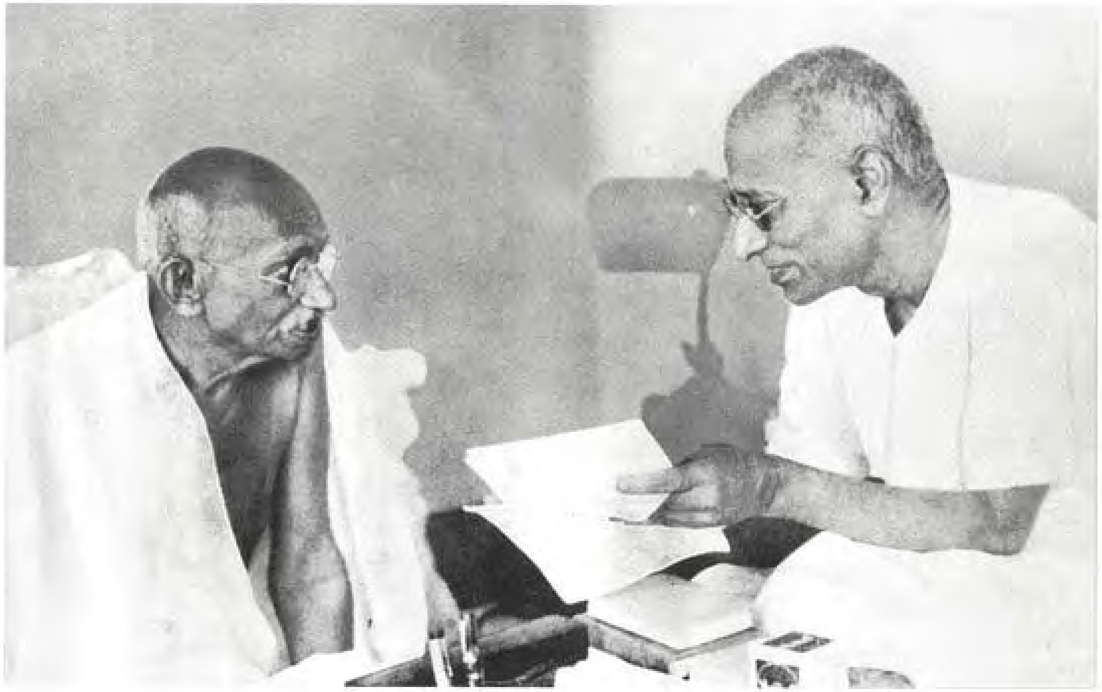

महात्मा गांधी, अपने सबसे करीबी साथी
सी. राजगोपालाचारी 'राजाजी' के साथ.

पूरे देश ने गांधी के आह्वान का जवाब दिया. अब शायद पहली बार, ब्रिटिश सरकार को इस महान आध्यात्मिक अहिंसक नेता की शक्ति का एहसास हुआ. सरकार ने इसके जवाब में जुलूस में भाग लेने वाले निर्दोष लोगों को गोली मारी.

गांधी इस हिंसा से बुरी तरह परेशान हुए और वो दिल्ली के लिए रवाना हुए, लेकिन उन्हें रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया गया. उससे देश में और भी अशांति फैली और हिंसा भी हुई. गांधी ने तुरंत आंदोलन बंद कर दिया, लेकिन अंग्रेजों ने उसका भयानक प्रतिशोध लिया.

13 अप्रैल, 1918 को ब्रिटिश सैनिक कमांडर ने निहत्थे नागरिकों, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों का नरसंहार किया, जो हिंदू नववर्ष की छुट्टी वाले दिन जलियांवाला बाग में पिकनिक मनाने गए थे. नागरिकों के भागने का कोई रास्ता नहीं था और सैनिकों ने ठंडे खून में गोली चलाईं जिसमें तीन हजार से अधिक लोग घायल हुए. इस घृणित घटना के बाद, पंजाब में मार्शल लॉ घोषित किया गया और लोगों को सड़कों पर रेंगने के लिए मज़बूर किया गया. इस घटना से ब्रिटिश साम्राज्य के अंत की शुरुआत हुई और ब्रिटिश सत्ता का सम्मान दुनिया की आंखों में धूल में मिल गया. नागरिक कार्रवाई के प्रदर्शन में लोगों ने सभी दुकानें बंद रखीं और पूर्ण रूप से हड़ताल की. उस दिन गांधी बॉम्बे के समुद्र तट - चौपाटी पर गए. जल्द ही वहां लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी. एक तत्कालीन अखबार के अनुसार “वहां पर लगभग सभी समुदायों के डेढ़ लाख लोग होंगे जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, पारसी और अँगरेज़ भी शामिल थे."

गांधी के आह्वान ने एक जादू का काम किया. उनकी आवाज पूरे भारत में गूंजी और अब लोग उन्हें महात्मा बुलाने लगे. अहिंसात्मक आंदोलन ने पूरे देश को जकड़ लिया था. ब्रिटिश सरकार ने पुरुषों और महिलाओं को गिरफ्तार करकेजवाबी कार्रवाई की.

गांधी ने लगातार कहा, "मैं शांति में विश्वास करता हूं, लेकिन किसी भी कीमत पर नहीं."

महान कवि रबीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा, "यह सौभाग्य की बात है कि इस आंदोलन का नेतृत्व गांधी जैसे व्यक्ति कर रहे हैं, जिनके संत जीवन को पूरे भारत में सराहा है".

लेकिन लोगों के अहिंसक संघर्ष ने एक दुखद मोड़ लिया जब फरवरी 1922 में पुलिस पर एक गुस्साई भीड़ ने चौरी चौरा (उत्तर प्रदेश) में हमला किया और उन्माद में, उन्हें मार डाला और पुलिस स्टेशन को आग लगा दी. गांधी ने अपने अभियान को बंद किया. "मेरा ज़ोर सिर्फ दो चीज़ों पर है," उन्होंने कहा "वे हैं सत्य और अहिंसा."

बेशक सरकार ने इस घटना का पूरा फायदा उठाया. जनता से बचाने के लिए गांधी को देर रात के समय गिरफ्तार किया गया.

शांति के लिए एक अथक कार्यकर्ता के रूप में गांधी, ट्रेन रुकते समय एक बैठक को संबोधित करते हुए.

गांधी ने अपने मुकदमे में कहा कि उनका किसी भी प्रशासक से बैर नहीं था. उन्होंने सिर्फ सरकार को दोषी ठहराया जिसने भारत को किसी भी पिछली व्यवस्था की तुलना में अधिक नुकसान पहुंचाया था.

उन्होंने खुद के लिए "उच्चतम दंड" की मांग की और उन्हें छह साल की जेल हुई. फिर भी, उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ कोई वैमनस्य नहीं दिखाया. "वैसे तो मेरा सरकार के साथ एक गहरा झगड़ा है, फिर भी मैं अंग्रेजों से प्यार करता हूं और उनके बीच मेरे कई दोस्त हैं," उन्होंने एक दोस्त से कहा.

जेल से बाहर आने के बाद गांधी ने अपने दर्शन की नींव गढ़ने के लिए खुद को समर्पित किया. इसका मतलब कई चीजें थीं, जैसे अस्पृश्यता दूर करना, महिलाओं के लिए समान अधिकार हासिल करना और मशीनों से नहीं बल्कि हाथ की कताई से, सभी को रोज़गार मुहैय्या करवाना. वो राष्ट्रीय आंदोलन में भाग न लेकर अपने विचारों का परीक्षण करना चाहते थे. इस समय उन्होंने गुजराती में "द स्टोरी ऑफ माय एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ" लिखी, जिसका बाद में अंग्रेजी में अनुवाद हुआ.

यह वर्ष 1929 था. जनता, ब्रिटिश सरकार के झूठे वादों से तंग आ चुकी थी. सुधारों को आगे बढ़ाने के लिए साइमन कमीशन नियुक्त किया गया था, लेकिन उसमें एक भी भारतीय सदस्य नहीं था!

गांधी और कांग्रेस अब कोई समझौता नहीं करना चाहते थे. अब उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता या पूर्ण स्वराज का एक प्रस्ताव पारित किया. 26 जनवरी, 1930 को लाखों लोगों ने वो प्रतिज्ञा ली. बीस साल बाद, उसी दिन भारत ने अपना संविधान अपनाया और तब से वो दिन भारत में गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा. 12 मार्च 1930 को अहमदाबाद में अपने आश्रम से, गांधी ने नमक कानून को तोड़ने के लिए ऐतिहासिक दांडी मार्च का नेतृत्व किया. इस कानून ने सबसे गरीब लोगों को भी नमक से वंचित किया था. महापुरुष गांधी ने उस पदयात्रा की सूचना वायसराय को दी. वायसराय को वो कोई ध्यान देने योग्य बात नहीं लगी! उनका आकलन कितना गलत था. जैसे-जैसे गांधी तेज़ क़दमों से आगे बढ़े हज़ारों लोग उनके साथ जुड़े. पुलिस ने उन्हें मारा-पीटा, परेशान किया और उनपर गोलियां बरसाईं, लेकिन कोई भी आंदोलनकारी रुका नहीं. हजारों लोगों ने गिरफ्तारी दी और उन्होंने जेलों को भरा. शायद यही वो क्षण था जब ब्रिटेन की भारत से हार हुई.

12 मार्च 1930 को अहमदाबाद में, नमक यात्रा
(दांडी मार्च) का नेतृत्व करते हुए.

लंदन की सरकार ने भारत के भविष्य के संविधान पर चर्चा करने के लिए नवंबर 1930 में एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया. उसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से किसी को भी नहीं बुलाया गया.

सम्मेलन की विफलता के एहसास के बाद वायसराय ने गांधी को बातचीत के लिए आमंत्रित किया. बात बहुत लम्बी चली और तब गांधी ने, जो आहार के बारे में बहुत सख्त थे, अपना दोपहर का भोजन मंगाया. भोजन, मुख्य रूप से खजूर और दूध था और वो गांधी के जेल के कटोरे में लाया गया था! वाइसराय, गांधी के सादे खाने को देखते रहे और उन्होंने बर्तन में भी झांककर देखा!

गोलमेज सम्मेलन का पहला सत्र,
14 सितंबर, 1931 को सेंट जेम्स पैलेस में.

1931 में, गांधी दूसरे गोलमेज सम्मेलन के लिए लंदन रवाना हुए. लंदन में रहते हुए, वह सबसे गरीब बस्ती में रहे और जल्द ही उन्होंने मेहतनक़श लोगों का दिल जीत लिया. वो जहां भी गए, भीड़ ने उनका पीछा किया, और उस महान इंसान को प्यार दिया. लेकिन ब्रिटेन की सरकार के साथ, कुछ अलग ही कहानी थी. ग़ांधी गरीब मज़दूरों की प्रशंसा और प्यार के अलावा और कुछ हासिल नहीं कर पाए. वापसी में वो लेखक और उनके प्रशंसक रोमैन रोलैंड से मिले. रोलैंड ने गांधी की जीवनी लिखी. उसमें उन्होंने गांधी की तुलना सेंट फ्रांसिस ऑफ़ असीसी से की. "यह छोटा आदमी", उन्होंने लिखा "अथक है और थकान शब्द उसकी शब्दावली में मौजूद नहीं है." गांधी को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी, फोटोग्राफर से लेकर दूधवाले तक, जो "भारत के राजा" को दूध देना चाहते थे!

घर आने पर गांधी को अधिक दमन, गोलीबारी और गिरफ्तारी का सामना करना पड़ा. जवाहरलाल नेहरू, बम्बई में उन्हें लेने आ रहे थे. उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया. एक हफ्ते बाद बिना किसी मुकदमे के गांधी को भी पुणे की येरवडा जेल में डाल दिया गया.

गांधी ने कहा "मुझे याद नहीं कि मैंने हाल में हथकरघा या चरखा देखा हो, जबकि 1908 में मैंने "हिंद स्वराज" में चरखे को भारत की कंगाली हटाने के लिए रामबाण बताया था." उन्होंने चरखे का इस्तेमाल पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता लाने में और तथाकथित अछूतों के लाभ के लिए भी किया. फिर भारतीय राष्ट्रवादियों ने अपने विदेशी कपड़े जलाए और खादी पहनना शुरू की.

भारत में ब्रिटेन से निर्यात किया कपड़ा लगभग 80% कम हो गया. एक लेखक ने लिखा, “खादी के लिए पूरी तरह से संगठित किया जाने वाला कोई भी जिला सिविल डिसओबेडिअन्स के लिए तैयार है. ब्रिटेन से भारत को आजादी दिलाने के लिए चरखा एक अद्भुत हथियार था."

गांधी का हर बड़े नेता पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा. उन्होंने सार्वजनिक बैठकों में अंग्रेजी की बजाए राष्ट्रभाषा में बोलने पर जोर दिया. मोतीलाल नेहरू और उनके बेटे जवाहरलाल नेहरू ने अपनी ब्रिटिश जीवन शैली छोड़ दी. अब वे पूरी तरह से बदल गए और भारतीय वस्त्र पहनने लगे.

दिसंबर 1947 में भारतीय संघ के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ आखिरी फोटो.

4 जनवरी, 1932 को, ब्रिटिश सरकार ने गांधी समेत कई अन्य भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं को फिर से गिरफ्तार किया. मिराबेन को गिरफ्तार करके उन्हें अपराधियों के साथ एक कोठरी में रखा गया. गांधी ने लिखा, "हमारे शब्दकोष में अपराधी शब्द वर्जित होना चाहिए." फिर उन्होंने बाइबिल का हवाला देकर कहा, "आपमें से जिसने कभी कोई पाप नहीं किया हो, वो पहले पत्थर फेंके."

जेल में भी वे राजनीतिक स्थिति से अवगत थे और जब सांप्रदायिक निर्णय की घोषणा हुई तो वो बेहद हैरान हुए. इस निर्णय में अछूतों के लिए एक अलग निर्वाचक मंडल की घोषणा की गई थी, जिसका अर्थ होता कि अछूत जीवन भर उसी ख़राब हालत में रहते और जीते. फिर गांधी ने अपने अछूतों भाइयों के लिए आमरण अनशन पर जाने की घोषणा की और उन्हें हरिजन नाम दिया.

उनके "दोस्त" ने पहले ही एक तार भेजा था "हम अपने दुःखी दिल, श्रद्धा और प्रेम के साथ आपकी तपस्या का पालन करेंगे." अब पूरा राष्ट्र उत्तेजित हो गया था. अस्पृश्यता की बुरी प्रथा से पहली बार निबटा गया और कई मंदिरों को हरिजनों के लिए खोल दिया गया. "अगर भारत को जीना है, तो अस्पृश्यता को मरना होगा," गांधी ने कहा "मैं अपने दबे-कुचले हुए भाइयों को त्यागने की बजाय यह चाहूंगा कि मेरे टुकड़े-टुकड़े हो जाएं."

मई 1933 को उन्हें जेल से रिहा किया गया और तब उन्होंने अपना अनशन तोड़ा. उनके मित्र रबीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें सबसे पहले बधाई दी और "गीतांजलि" के एक गीत का पाठ किया.

देशबंधु चित्तरंजन दास के साथ महात्मा गांधी का शायद एकमात्र चित्र, जब वे जून 1925 को दार्जिलिंग में मिले.

गांधी कभी भी साबरमती आश्रम वापिस नहीं लौटे, क्योंकि उन्होंने यह घोषणा की थी कि वो तब तक वापस नहीं आएंगे जब तक भारत आजाद नहीं होगा. अहमदाबाद से वो वर्धा, महाराष्ट्र चले गए और वहां उन्होंने अपना समय हरिजन समस्याओं के लिए समर्पित किया. भारतीय गांवों की अर्थव्यवस्था को विकसित करते समय वो चाहते थे कि हर गाँव आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो. वो सपना अभी भी साकार नहीं हुआ है. भारत के लोग आजादी के लिए तैयार थे. कई युवाओं को अहिंसा में अपने सवालों का उत्तर नहीं मिल रहा था. क्रिप्स मिशन की विफलता ने सबको इस बात का एहसास दिलाया कि अंग्रेज, भारत छोड़ने के मूड में नहीं थे.

फिर 1939 में युद्ध छिड़ गया. गांधी अब तक ब्रिटिश सरकार के लिए सभी स्नेह और सम्मान खो चुके थे. गांधी अब युद्ध को पूरी तरह से गलत मानने लगे थे. उनका पंथ अहिंसा का था, और उन्होंने कहा, "जहां विकल्प केवल कायरता और हिंसा के बीच में हो, वहां मैं हिंसा की सलाह दूंगा."

ब्रिटेन द्वारा लड़ाई में तमाम कठिनाइयां झेलने के बावजूद, फ्रांस के पतन और जर्मनी में यहूदी लोगों के भयानक कत्लेआम के बाद भी, गांधी ने स्थिति का लाभ उठाने से इंकार किया. विंस्टन चर्चिल ने युद्ध के प्रयासों में भारत की मदद मांगने के लिए सर स्टेफोर्ड क्रिप्स को भारत भेजा.

लेकिन वो मिशन फेल हुआ. तमाम कठिनाइयां झेलने के बाद में भारतीयों का, ब्रिटिश सरकार पर से पूरी तरह भरोसा उठ गया था. गांधी का भी मोहभंग हो चुका था और उन्होंने क्रिप्स को अगले विमान से इंग्लैंड जाने को कहा.

पूर्व में, जापानी खतरा वास्तविक था. यह खबर कि भारतीय नेता, सुभाष चंद्र बोस वहां आज़ाद हिन्द फौज का नेतृत्व कर रहे थे और कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन के नेतृत्व में एक महिला सेना अपने भाइयों के साथ लड़ रही थी, भारतीयों के लिए प्राणपोषक थी.

अगस्त 7,1942 को गांधी ने "भारत छोड़ो" आंदोलन की घोषणा की, जिसने सभी लोगों को प्रेरित किया. अंग्रेजों ने पुराने तरीके से जवाब दिया. अगस्त के शुरू में, गांधी और कांग्रेस के अन्य नेताओं को गुप्त रूप से गिरफ्तार कर लिया गया और पुलिस की निगरानी में विभिन्न स्थानों पर भेज दिया गया.

उससे पूरा भारत आगबबूला हुआ. लोगों ने इसका हर जगह विरोध किया और हर संभव तरीके से प्रशासन में बाधा डालने की कोशिश की. ब्रिटिश सरकार ने कड़े कदम उठाए और ऐसा लगा जैसे भारत देश पर सेना का कब्ज़ा हो.

कांग्रेस के अन्य सदस्यों के साथ सरदार वल्लभभाई पटेल और महात्मा गांधी.

गांधी, सरोजिनी नायडू, मीराबेन और कस्तूरबाई जैसे नेताओं के साथ आगा खान पैलेस में बंद किया गया.
गांधी के पास उपवास के अलावा कोई और विकल्प नहीं बचा. उन्होंने 21 दिनों का उपवास किया जिसे वायसराय ने "राजनीतिक ब्लैकमेल" बताया.
उसके विरोध में सरकार के कई सदस्यों ने इस्तीफा दिया, लेकिन उससे कोई फर्क नहीं पड़ा.
पैलेस जेल में रहते हुए, दो बड़े हादसे हुए. गांधी के इष्ट मित्र और सचिव महादेव देसाई, जिनसे वे बहुत प्यार करते थे, और जिन्होंने पच्चीस सालों तक गांधी की सेवा की थी का देहांत हो गया.

जेल से छूटने के बाद और भी बुरा हाल हुआ. दिसंबर में, उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी बीमार हो गईं और उनका भी निधन हो गया. उनकी और गांधी की शादी को बासठ साल हो गए थे.

कस्तूरबा गांधी

गांधी खुद बहुत कमजोर हो गए थे और भारत की जनता ने उनकी रिहाई की मांग की. गांधी, अब अपने गहरे दुःख से बेहद कमजोर थे, और उनका शरीर उपवास से क्षीण हो गया था.फिर 6 मई को उन्हें रिहा किया गया.

महादेव भाई के साथ जेल छोड़ते हुए.

जेल से मुक्त होकर, उन्होंने हिंदुओं और मुस्लिमों के विभाजन की समस्या का सामना किया लेकिन वो व्यर्थ रहा. उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए अपना सारा जीवन लगाया था. फिर भी वो दोनों समुदायों के बीच सद्भाव का माहौल बनाने में विफल रहे.

मोहम्मद अली जिन्ना के साथ महात्मा गांधी.

स्थिति पूरी तरह से धूमिल थी. कांग्रेस के ज्यादातर नेता जेल में थे. मोहम्मद अली जिन्ना एक अलग देश बनाना चाहते थे, अंग्रेज अपने जीवन की लड़ाई कर रहे थे, फिर भी भारत पर अपना शिकंजा कसे हुए थे. युद्ध की लूट ने भारत को पहले ही नोच लिया था और तभी एक भयानक अकाल ने बंगाल को तबाह कर दिया.

गांधी अपने खराब स्वास्थ्य के बावजूद, हर जगह लोगों को प्रोत्साहित और प्रेरित कर रहे थे. "आपका भविष्य आपके हाथों में है," उन्होंने लोगों से कहा.

युद्ध के बाद शायद थके हुए ब्रिटेन को समझ में आया कि भारत पर शासन करना अब कोई गर्व की बात नहीं थी. ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ने भारत के लिए स्व-शासन की घोषणा की.

एक कैबिनेट मिशन भारत भेजा गया और बहुत चर्चा के बाद वायसराय ने जवाहरलाल नेहरू से सरकार बनाने का अनुरोध किया. यह 12 अगस्त, 1946 को हुआ. जिन्ना, जो एक अलग राज्य चाहते थे, उन्होंने 16 अगस्त को "सीधी कार्रवाई" का दिन घोषित किया.

अपने जीवन की पूर्व संध्या पर, नंगे पांव, भगवान और सच्चाई में विश्वास के साथ, दिल में केवल मानव जाति के लिए प्यार लिए, वो नवंबर 1946 को नोवाखली में शांति, आपसी सद्भाव और वहां के समुदायों के बीच सम्मान बहाल करने के लिए गए.

हिंदू और मुसलमानों एक-दूसरे का कत्ल कर रहे थे, और सभी तरफ नरक जैसा माहौल था. गांधी ने हिंदुओं से शांति बनाने का आह्वान किया. वो सहिष्णुता की बात करने के लिए तुरंत बंगाल गए. लेकिन साम्प्रदायिकता का जहर बिहार में पहले ही फैल चुका था.

गांधी ने गाँवों में जाकर हर जगह तबाही ही देखी.

वह 77 साल के थे, उनकी सेहत कमजोर थी, वो बहुत कम खा रहे थे. फिर भी हर जगह चलकर जाते थे. उन्होंने ईश्वर और अल्लाह दोनों के नाम पर लोगों से शांति और सद्भावना बनाए रखने की मिन्नत की.

लेकिन लोगों ने उनकी बात नहीं सुनी. मुसलमानों ने हिंदुओं को मारा, उनकी महिलाओं का बलात्कार किया और बच्चों को कत्ल किया. हिंदुओं ने उसी बर्बर तरीके से बिहार में जवाबी कार्रवाई की. गांधी ने कहा, "मेरे लिए बंगाल में मुसलमानों और बिहार के हिन्दुओं की बर्बरता एक जैसी है और दोनों समान रूप से निंदनीय हैं."

गांधी ने जितनी शांति और सद्भावना लाने की कोशिश की, लोग उनसे उतने ही ज़्यादा नाराज हुए. फिर भी, महिलाएं अपने बच्चों के साथ दूर के गांवों से उन्हें श्रद्धांजलि देने आईं.

अंत में ब्रिटिश सरकार ने एक नया वायसराय नियुक्त करने का निर्णय लिया जो भारतीय लोगों के हित में कार्य करे और फिर लॉर्ड माउंटबेटन दिल्ली आए.

सद्भावना के पहले कदम में उन्होंने गांधी को दिल्ली आमंत्रित किया. गांधी देश के विभाजन के खिलाफ थे पर उनकी आवाज की अनसुनी हुई. "आज मैं खुद को अकेला पा रहा हूँ," उन्होंने कहा. "लोग यह न कहें कि गांधी, भारत के विभाजन पक्ष में है."

वो स्वतंत्रता समारोह में भाग लेने के लिए दिल्ली नहीं गए, लेकिन उनके पास उनका संदेश लेने कोई ज़रूर गया. "मेरा कोई संदेश नहीं है," महात्मा ने कहा. "अगर स्थिति ख़राब है, तो उसे रहने दो."

गांधी ने अब खुद को हर तरफ से बदनाम पाया. उनके द्वारा शांति और सद्भावना लाने के प्रयासों से हिंदू और मुस्लिम दोनों नाराज हो गए. उनके 78वें जन्मदिन पर, दुनिया भर से शुभकामनाएं आईं, लेकिन उन्होंने पूछा कि क्या लोगों को संवेदना देना बेहतर नहीं होगा. "प्रार्थना करें कि वर्तमान आतंक समाप्त हो या फिर भगवान मुझे उठा ले," उन्होंने कहा. "मैं एक और जन्मदिन की कामना नहीं करता हूँ, ऐसे भारत में जो अभी भी आग की लपटों से घिरा है."

12 जनवरी को उन्होंने अपनी प्रार्थना सभा में बताया कि वो अगले दिन से उपवास रखेंगे. "उपवास तब खत्म होगा," उन्होंने कहा, "जब मुझे यकीन होगा कि विभिन्न समुदाय अपनी मर्जी से एक-दूसरे से अच्छे संबंध स्थापित करना शुरू करेंगे."

अकेले तीर्थयात्री

लॉर्ड और लेडी माउंटबेटन
के साथ महात्मा गांधी.

"हमेशा की तरह, उपवास का जबरदस्त प्रभाव हुआ, उसने एक ऐसी शक्ति का प्रदर्शन किया जो परमाणु बम से अधिक ताकतवर साबित हो सकता था और जिसे पश्चिम को ईर्ष्या और आशा के साथ देखना चाहिए," एक ब्रिटिश पत्रकार ने लिखा.

जब दिल्ली में होते तो गांधी हर शाम प्रार्थना सभा आयोजित करते थे, जिसमें हर धर्म की प्रार्थनायें पढ़ी जाती थीं. प्रार्थना समाप्त होने के बाद गांधी सामयिक मुद्दों पर बोलते थे. उन्होंने किसी भी पुलिस सुरक्षा से इंकार किया था, हालांकि कई लोग मानते थे कि उनकी जान को खतरा था.

कई साल पहले, जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में एक क्रोधी आदमी ने उन्हें धमकी दी थी. उस समय उन्होंने कहा था, "किसी बीमारी की बजाए एक भाई के हाथों मरना, मेरे लिए दुःख की बात नहीं हो सकती है."

20 जनवरी को प्रार्थना सभा में एक बम विस्फोट हुआ. गांधी ने उसे अनदेखा किया और अपनी बात जारी रखी. वहां मौजूद लेडी माउंटबेटन ने बाद में गांधी को बहादुरी के लिए बधाई दी.

30, 1948 जनवरी को अंतिम प्रार्थना सभा में भाग लेने के लिए (सामने का दृश्य).

30 जनवरी को भी हमेशा की तरह 3.30 बजे प्रार्थना शुरू हुई.

गांधी ने अपना काम खत्म किया. भविष्य में कांग्रेस कैसे काम करे उन्होंने उसका मसौदा तैयार किया था.

आगंतुक आते रहे और हमेशा की तरह उनसे मिलते रहे. सबसे आखिर में "भारत के लौह पुरुष" सरदार पटेल आए थे. प्रार्थना के लिए देर हो रही थी, इसलिए गांधी ने अपनी परपोतियों के कंधों पर हाथ रखकर रास्ते में लोगों का अभिवादन करते हुए लॉन की ओर प्रस्थान किया. तभी एक युवक ने सभी को एक तरफ धकेला. उसने महात्मा गांधी के सामने घुटने टेककर, उनकी छाती में तीन गोलियां दागीं. महात्मा, जमीन पर गिर गए.

30 जनवरी, 1948 को अपनी अंतिम प्रार्थना सभा में भाग लेने के लिए (पीछे से).

भारत के इस महान सपूत महात्मा गांधी की मृत्यु से पूरी दुनिया हिल गई. वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने समस्त मानवता के लिए बोलते हुए लिखा, "आने वाली पीढ़ियों को यकीन नहीं होगा कि इस तरह का मांस और रक्त का कोई आदमी कभी इस धरती पर चला होगा." आज हम में से प्रत्येक इंसान को महात्मा गांधी के दर्शन के लिए खुद को समर्पित करना चाहिए. आइए हम पृथ्वी पर शांति स्थापित करने का प्रयास करें ताकि हम एक अहिंसक दुनिया में जी सकें.

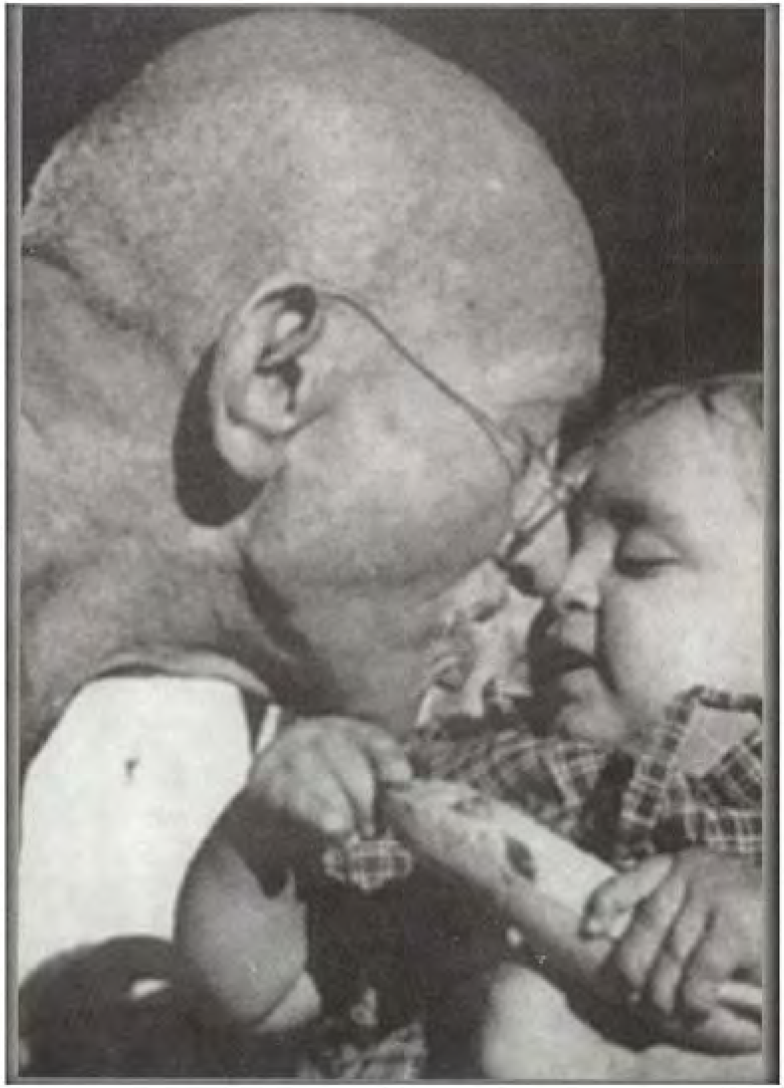

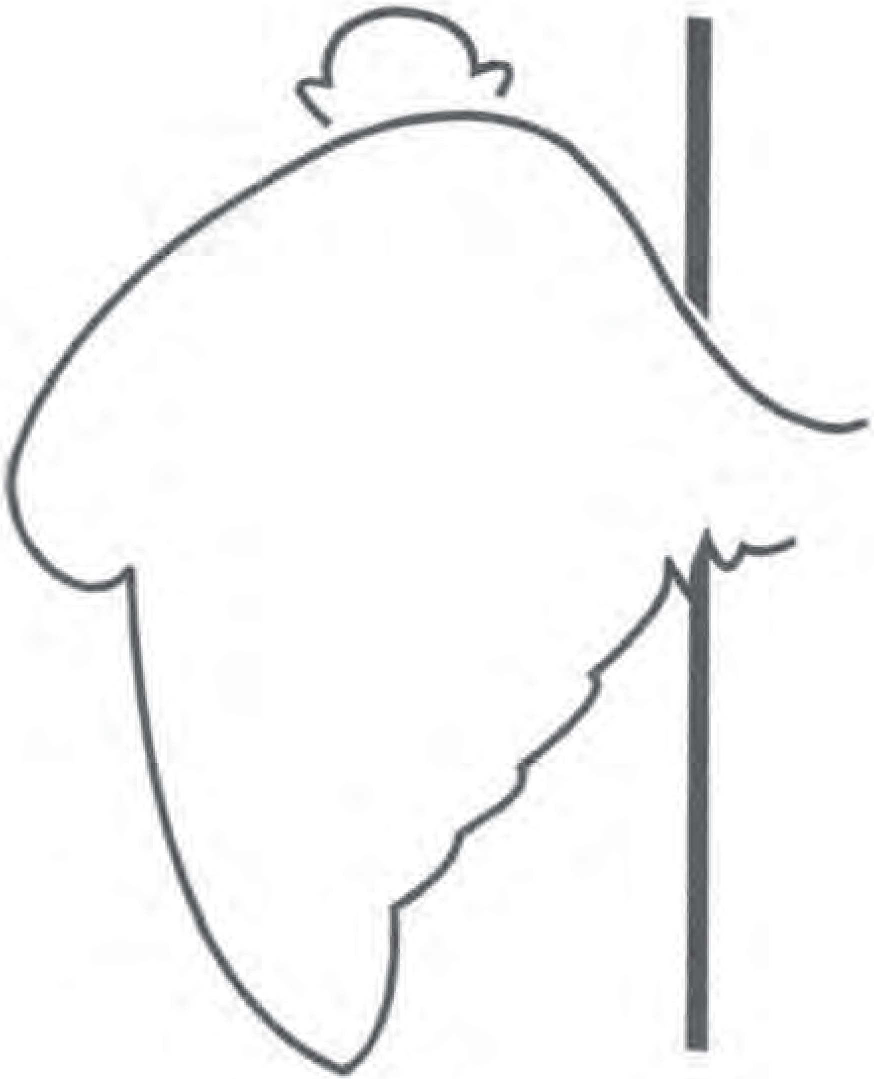

लेखिका परिचय :

भरतनाट्यम में प्रशिक्षित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त नृत्यांगना और कोरियोग्राफर मृणालिनी साराभाई अपने नवाचारों के लिए प्रतिष्ठित और बेजोड़ थीं. जावा, इंडोनेशिया और अमेरिका में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होंने 1948 में, अहमदाबाद में नृत्य, नाटक और संगीत के लिए दर्पणा अकादमी की स्थापना की. उन्होंने बहुत से उपन्यास और बच्चों की किताबें लिखीं. वो सर्वोदय इंटरनेशनल ट्रस्ट के ट्रस्टियों में से एक थीं, जो सत्य, अहिंसा, शांति, सार्वभौमिक भाईचारे और मानवतावादी सेवा से गांधीवादी आदर्शों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक संगठन है. साराभाई चार दशकों से भारतीय विद्या भवन के साथ भी जुड़ी हुई थीं और उन्होंने उनकी पुस्तकें "भारत के पवित्र नृत्य" और "महात्मा और कवि " प्रकाशित कीं. 2016 में, 98 साल की उम्र में उनका निधन हो गया.

2007 में भारतीय विद्या भवन द्वारा पहली बार प्रकाशित.

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: मोहनदास करमचंद गांधी is translated by Arvind Gupta . The © for this translation lies with Arvind Gupta, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Mohandas Karamchand Gandhi', by Mrinalini Sarabhai . © Mrinalini Sarabhai , 2007. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Cover page: Gandhi with children, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Theatre performance, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Ancestral house, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Young Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Potrait, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Barrister Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: London conglomeration, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Rev. C.F.Andrews, Mr. Pearson and Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Getting pushed off the train, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: Mahatma with Kasturba Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

CC BY

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 13: Mahatma Gandhi with H. Kallenbach, G. Isaac and Mrs. Pollak, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Gandhi in South Africa, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Silhouette of Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Gandhi in Durban with wife and friends, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Historical group picture, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: Gandhi reading, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 23: Father of the Nation, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 24: Mahatma, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 26: Conglomeration in South Africa, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 27: Gandhi scribbling, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 28: Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 29: Tagore and Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 31: Gandhi and Mrudula Sarabhai, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 33: Gandhiji with charkha, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 35: At Sabarmati, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 36: Gandhiji and Rajaji, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 37: Jalianwalahbagh, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 39: Train hault, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 41: Dandi March, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 42: Round table conference, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 43: Smiling Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 45: Nehru and Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 46: Gandhi on the march, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 49: Mahatma Gandhi with Sardar Vallahbhai Patel with other members of Congress, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 50: Leaving jail, wife, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 51: Mahatma Gandhi with Mohammed Ali Jinnah, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 52: Gandhi taking off garland, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 54: MK Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 55: Mahatma Gandhi with Lord & Lady Mountbatten, the three monkeys, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 56: Prayer meeting, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 57: From the prayer meet, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 58: Gandhi with a child, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 59: Black silhouette of Gandhi, by Goutam Sen © StoryWeaver, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 60: Bharatiya Vidya Bhavan, by Goutam Sen © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मोहनदास करमचंद गांधी

(Hindi)

सारभाई की किताब राष्ट्रपिता के जीवन के तमाम पहलुओं पर प्रकाश डालती है. इस किताब के रोचक कहानी-किस्से, बच्चों का गांधीजी के जीवन से अच्छी तरह परिचय कराएंगे.

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!